सहजयोग आज का महायोग

सूक्ष्म तंत्र की क्रियाशीलता में ही सर्वोच्च आनंद की अनुभूति होती है

परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी ने अपने प्रवचन में कई बार इस सत्यता को अभिव्यक्त किया है कि मानव जीवन की आंतरिक स्थिति के लिए सूक्ष्म शरीर व हमारी आंतरिक तंत्र प्रणाली जिम्मेदार है। चिकित्सा विज्ञान में शरीर की नाड़ियों और रक्त नलिकाओं को जिसे प्लेक्सेस कहते हैं और जो विभिन्न अंगों के कार्यान्वयन पर नियंत्रण रखता है, को पूर्णतया स्वीकार करता है व इस आधार पर व्यक्ति की चिकित्सा भी करता है।

परंतु इस तथ्य का कोई ठोस स्पष्टीकरण चिकित्सा विज्ञान के पास उपलब्ध नहीं है कि एक छोटे से मिथ्या तर्क पर भी मानव तनावग्रस्त क्यों हो जाता है। एक ही परिस्थिति अलग अलग लोगों को अलग अलग तरह से कैसे प्रभावित करती है? यह ऐसे प्रश्न हैं जो हमारे मन में भी कुलबुलाते रहते हैं। यदि हमने किसी घटना को गंभीरता से नहीं लिया, पर समाधान पाने पर ज्यादा ध्यान दिया तो हम पर उस घटना का दुष्प्रभाव अपेक्षाकृत कम होगा। पर ऐसा तभी संभव है जब हमारे अंतर का सूक्ष्म तंत्र क्रियाशील हो जाये।

इस पूरे ब्रम्हांड में सूक्ष्म शक्ति? क्रियाशील है। इस सूक्ष्म शरीर के सूक्ष्म प्रवाह से ही धरती में बीज का अंकुरण होता है, फूल खिलते हैं, फल पकते हैं, पेड़ पौधे अपनी निश्चित परिधि में ही बढ़ते हैं और सारे पशु पक्षी प्रकृति द्वारा निर्धारित किये गये नियम का पालन करते हुये अपना जीवन यापन करते हैं। दरअसल हम यह सोचना ही नहीं चाहते हैं कि प्रकृति कौन सी शक्ति से जुड़कर कार्य करती है। यह दैवी प्रेम की व्यापक शक्ति है और सहज योग के माध्यम से मानव इस दैवीय प्रेम को हमारे अंदर के यंत्रों को जागृति (आत्मसाक्षात्कार) के उपरांत अनुभव कर पाता है। अंदर की जागृति या आत्मसाक्षात्कार यानि मुख्य शक्ति के प्रवाह से जुड़ना है। मनुष्य अपनी क्षमता, अपनी सुंदरता को पहचान ही नहीं पाता है क्योंकि अंदर की शक्ति का उसे आभास ही नहीं है।

यह सूक्ष्म शक्ति कुंडलिनी की शक्ति है जो माता के गर्भ में आने के समय से ही हमारे अंदर स्थित है। इसी शक्ति से जुड़ने का योग है सहज योग। हमारी आंतरिक शक्ति को पूर्णतया समझने के लिए सहज योग से जुड़कर साधना हेतु मन? बनाना होगा। हमारे सूक्ष्म शरीर के सातों चक्र और तीनों नाड़ियाँ हमारे तन, मन को नियंत्रित करते हैं, फलस्वरूप समस्याओं का समाधान सहजता से होने लगता है। सहज योगी परिवार, समाज और किसी प्रकार के प्रलोभन में लिप्त नहीं होते और जीवन का भरपूर आनंद उठाते हैं। सहजयोग का अनुभव हर आनंद से सर्वोपरि है, बस हममें गहनता पाने?? की चाह होनी चाहिए और होनी चाहिए इस योग को पाने की शुद्ध इच्छा।

सहजयोग ध्यान केंद्र की जानकारी हेतु टोल फ्री नंबर 1800 2700 800 से प्राप्त कर सकते हैं। सहज योग पूर्णतया निशुल्क है।

दर्पण
सुनील शर्मा,
राजेंद्र नगर इंदौर
-91 99260 20094

जलवायु परिवर्तन

जलवायु परिवर्तन आज केवल वैज्ञानिकों की चेतावनी भर नहीं रह गया, बल्कि यह हमारे जीवन का कठोर यथार्थ बन चुका है। हिमालयी क्षेत्रों में लगातार हो रहे भूस्खलन, बादल फटना और बाढ़ जैसी घटनाएँ इसी असंतुलन का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। कभी जो पहाड़ अपनी स्थिरता और शांति के लिए पहचाने जाते थे, वहीं अब अस्थिरता और भय का प्रतीक बनने लगे हैं। धरावी, मंडी और हिमाचल की घाटियों में हाल की त्रासदियाँ केवल प्राकृतिक नहीं थीं, बल्कि हमारे अपने कर्मों का परिणाम थीं। जिस नाज़ुक ताने-बाने को ईश्वर ने बड़ी सूक्ष्मता से रचा था, उसे हमने लालच, अव्यवस्थित निर्माण और अंधाधुंध दोहन से तोड़ दिया है। प्रकृति का संतुलन अत्यंत कोमल होता है। पर्वत, नदियाँ, वन और आकाश ङ्क यह सब मिलकर एक सामंजस्य रचते हैं। जब हम इस सामंजस्य को तोड़ते हैं, तो प्रकृति भी अपना उत्तर देती है, कभी बाढ़ के रूप में, कभी भूस्खलन के रूप में और कभी भीषण वर्षा के रूप में। समस्या केवल मौसम के बदलने की नहीं है, समस्या यह है कि हमने यह मान लिया कि प्रकृति हमारे लिए है, जबकि सत्य इसके विपरीत है ङ्क हम प्रकृति की वजह से हैं, प्रकृति हमारी वजह से नहीं है। इन आपदाओं को केवल प्राकृतिक कहकर नज़रअंदाज़ करना सबसे बड़ी भूल होगी। यह एक गहरी चेतावनी है कि यदि हमने अभी भी अपने रास्ते नहीं बदले तो आने वाले वर्षों में जीवन और कठिन हो जाएगा। हमें प्रकृति के साथ फिर से संवाद स्थापित करना होगा, उसे शोषण का साधन नहीं, बल्कि सहअस्तित्व का साथी मानना होगा। विकास का अर्थ यह नहीं कि पहाड़ों को काटकर, नदियों को बाँधकर या जंगलों को उजाड़कर हरियाली मिटा दी जाए, विकास का अर्थ है संतुलन, वह संतुलन जो जीवन को सुरक्षा और शांति देता है। आज समय हमसे यही आह्वान कर रहा है कि हम अपनी सोच बदलें और स्वीकार करें कि हमारा अस्तित्व उसी धरती, उसी जल, उसी वायु से जुड़ा है जिसे हम नष्ट कर रहे हैं। यदि हमने इस चेतावनी को नहीं सुना तो आने वाली पीढ़ियों को विरासत में केवल असंतुलन और आपदाएँ ही मिलेंगी।

आत्मावलोकन जरुरी

सेलिब्रिटी, नेता, ग्लैमर इंडस्ट्री से जुड़े कलाकार, कथावाचक, धर्मगुरु एवं आम जनता में भी जन्मदिन सेलिब्रेट करने का क्रेज बढ़ता जा रहा है। किसी के भी जन्मदिन के अवसर पर प्रायः केक कटिंग, नाच गाना, पार्टी, घूमना फिरना, मंदिरों में दर्शन पूजन, जन सेवा के कार्य, दान पुण्य, धार्मिक आयोजन आदि गतिविधियां आयोजित की जाती हैं। जन्मदिन को उत्सव के साथ मनाना स्तुत्य है लेकिन इस अवसर पर अगर हम अपनी जिंदगी के भूतकाल के बारे में ईमानदारी के साथ आत्मावलोकन भी करें तो यह दिन हमारे लिए और भी विशिष्ट बन सकता है। वैसे तो प्रभु की इस संसार रूपी नाट्य शाला में प्रत्येक व्यक्ति अपना किरदार निभाकर अपने स्वधाम को वापस चला जाता है। इस अभिनय में गलतियां तो सभी से होती हैं। पर अपनी गलतियों को गलती मानना और उसे दिल से स्वीकार करना तथा आगे उनका रिपीटेशन ना हो इस बात की सतर्कता बरतने की कला हमें आत्मावलोकन से ही प्राप्त होती है। इस कला को अपनाकर हम उस परमपिता का आशीर्वाद और अनुग्रह भी प्राप्त कर सकते हैं।

ललित महालकरी इंदौर

कर्तव्यपालन के साथ पुलिस की एक भूमिका ऐसी भी -

घटना कुछ ऐसी है कि देवास जिले के कन्नौद क्षेत्र में चोरी का प्रयास किया गया। सूचना मिलते ही 5 मिनट के भीतर थाना प्रभारी तहजीब काजी घटनास्थल पर पहुंचे। चोरों का पीछा किया, इस दौरान एक चोर भागते-भागते करंट की चपेट में आकर घायल हो गया। पुलिस वाहन लगभग 1 किलोमीटर दूर था। रास्ता उबड़-खाबड़ था। ऐसी स्थिति में पकड़े गए घायल चोर को थाना प्रभारी अपनी पीठ पर लाद कर 1 किलोमीटर दूर अपने वाहन तक पहुंचे। जाहिर है कि चोर के समुचित उपचार का मार्ग प्रशस्त हुआ होगा। आखिरकार उसने अपनी अब तक की गई चोरियों का स्वत खुलासा कर दिया। इस घटना से समस्त पुलिस-प्रशासन के छोटे-बड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को एक सीख लेने की अत्यंत आवश्यकता है। निश्चित रूप से पुलिस ने अपने मूलभूत कर्तव्य को मूर्त रूप देते हुए मानवीय सरोकार का जीवंत परिचय दिया। इसके अतिरिक्त भागते चोर राजू के साथ मानवीय व्यवहार आजकल के दौर में प्रकारांतर से सामाजिक सौहार्द का पुलिसिया परिचय भी दे गया। इसमें दो मत नहीं कि आम नागरिकों के जनजीवन में जान माल की अहम सुरक्षा का भार पुलिस प्रशासन के कंधों पर ही होता है। निश्चित रूप से पुलिस अपराध की तहकीकात के दौरान बहुचर्चित धर्ड डिग्री का भी इस्तेमाल करती है। खैर।इस कारण ऐसा समझा जाता है कि पुलिस वालों के दिल में दिल नाम की चीज शायद ही होती है। आमतौर पर पुलिस एवं पुलिसिया गतिविधियों को लेकर आम नागरिकों के अंतर्मन में नकारात्मक भाव अधिक देखने में आया करता है। हालांकि पुलिस का वास्ता प्रतिष्ठित एवं संभ्रांत नागरिकों से कम ही पड़ता है। वैसे इसकी वजह बड़ी साफ है कि पुलिस प्रशासन का कार्यक्षेत्र ही ऐसा है कि छोटे-बड़े तमाम अपराधियों की गतिविधियों पर स्वाभाविक रूप से उनका ध्यान अधिक रहा करता है। बहुत कम पुलिस अधिकारी ऐसे होते हैं

जो अपने पारिवारिक संस्कारों के चलते अपने कार्यक्षेत्र में प्रतिष्ठित नागरिकों से जीवंत संपर्क रखा करते हो। आम नागरिकों के एक प्रकार से हितचिंतक प्रतिनिधि के रूप में स्थानीय तथा क्षेत्रीय मीडियाकर्मियों से पुलिस प्रशासन का जीवंत संपर्क होता है। जिसके चलते पुलिस-प्रशासन को अपने कर्तव्यपालन के प्रति अत्यधिक सचेत अवस्था में रहना पड़ता है। काफी हद तक पुलिस प्रशासन की निरंकुश कार्यशैली पर अंकुश लगाने में इन मीडिया कर्मियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा करता है। वैसे नगरीय एवं शहरी क्षेत्र में अलग-अलग त्यौहार की पूर्व बेला में पुलिस प्रशासन एवं अन्य विभागों द्वारा कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए संबंध में संबंधित क्षेत्र के संभ्रांत एवं प्रतिष्ठित नागरिकों के साथ शांति समिति की बैठक अवश्य ही आयोजित की जाती है।

जिसके चलते पुलिस प्रशासन के साथ-साथ अन्य विभागों को भी इस बैठक में विभिन्न शिकायत एवं सुझावों से सामना करना होता है। शिकायतों का त्वरित निराकरण एवं प्राप्त सुझावों का गुण-दोष के आधार पर अमलीकरण का मार्ग प्रशस्त होता है। इस बैठक के अतिरिक्त संभ्रांत एवं प्रतिष्ठित नागरिकों से प्रत्यक्ष संवाद की स्थिति आमतौर पर नहीं बना करती। यही एक कारण है कि आम जनमानस में पुलिस प्रशासन के प्रति जमाने भर की गलतफहमियां घर कर जाती है।

राजेंद्र बज

साप्ताहिक टैरो राशिफल 24 — 31 अगस्त

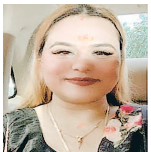

ज्योतिषाचार्य पूजाशक्ति के अनुसार इसमें सप्ताह के लिए टैरो कार्डों के माध्यम से राशि-आधारित भविष्यवाणियाँ दी गई हैं

टैरो कार्ड्स द्वारा जानिए कैसा रहेगा आपका सप्ताह – प्रेम, करियर, स्वास्थ्य और आर्थिक जीवन के दृष्टिकोण से।

सप्ताह का समग्र संदेश (Collective Card):

कार्ड The Wheel of Fortune

जीवन में उतार-चढ़ाव आते-जाते हैं। यह सप्ताह कर्म के चक्र को समझने और स्वीकार करने का है। बदलाव स्थायी नहीं होते

मेष (Aries)

कार्ड: The Magician

यह सप्ताह रचनात्मकता और आत्मविश्वास से भरा होगा। आप जो चाहेंगे, उसे पाने की शक्ति आपके पास है।

करियर नया प्रोजेक्ट शुरू हो सकता है।

लव लाइफ: आकर्षण बढ़ेगा, कोई नया रिश्ता भी शुरू हो सकता है।

टिप: अपने टैलेंट को दबाएं नहीं।

वृषभ (Taurus)

कार्ड: Four of Cups

थोड़ी ऊब और भावनात्मक थकावट हो सकती है। अवसर आपके सामने हैं, लेकिन आप देख नहीं पा रहे।

करियर बदलाव की ज़रूरत महसूस होगी।

लव लाइफ पुराने रिश्ते से असंतोष की भावना।

टिप-जागरूक होकर हर अवसर को पहचानें।

मिथुन (Gemini)

कार्ड: Knight of Wands

तेज़ रफ्तार वाला सप्ताह। आप जो चाहें, उसे तेजी से पा सकते हैं – लेकिन जल्दबाज़ी से बचें।

करियर: ट्रैवल या ट्रांसफर के योग।

लव लाइफ: किसी से जल्द आकर्षण, पर स्थायित्व पर ध्यान दें।

टिप- संतुलन बनाए रखें।

कर्क (Cancer)

कार्ड- Queen of Cups

भावनात्मक गहराई और दूसरों की मदद का भाव। यह सप्ताह आत्मविश्लेषण और दिल की सुनने का है।

करियर:सहयोगी आपके काम में मदद करेंगे।

लव लाइफ: प्रेम और समझदारी से भरा समय।

टिप दूसरों का ख्याल रखने के साथ खुद को मत भूलिए।

सिंह (Leo)

कार्ड- The Sun

यह सप्ताह सफलता, खुशी और आत्मविश्वास से भरपूर होगा। किसी बड़ी जीत या उपलब्धि का समय है।

करियर- प्रमोशन या पुरस्कार मिल सकता है।

लव लाइफ: रिश्तों में गर्मजोशी और पॉजिटिव वाइब्स।

टिप- इसे पूरे दिल से जिएं।

कन्या (Virgo)

कार्डछ: Eight of Pentacles

यह समय है मेहनत और कौशल निखारने का। जो भी काम करेंगे, उसमें प्रगति दिखेगी।

करियर: लर्निंग और ग्रोथ का अच्छा समय।

लव लाइफ: शांत लेकिन स्थिर रिश्ता।

टिप: फोकस बनाए रखें।

तुला (Libra)

कार्ड :Two of Swords

निर्णय लेने में दुविधा हो सकती है। कोई बड़ा फैसला है जिसे आप टाल रहे हैं।

करियर किसी प्रोजेक्ट को लेकर संशय।

लव लाइफ: रिश्ते में क्लैरिटी की ज़रूरत।

टिप सच्चाई से आंखें न चुराएं।

वृश्चिक (Scorpio)

कार्ड- The Tower

अप्रत्याशित बदलाव संभव हैं। यह झटका जीवन को सही दिशा में लाने का जरिया बन सकता है।

करियर: अचानक परिवर्तन, जैसे नौकरी बदलना।

लव लाइफ: सच्चाई सामने आ सकती है।

टिप: परिवर्तन को अपनाएं, विरोध न करें।

धनु (Sagittarius)

कार्ड: The Hierophant

यह सप्ताह परंपरा, गुरु या मार्गदर्शन से जुड़ा होगा। आध्यात्मिक सोच बढ़ेगी।

करियर: सीनियर की सलाह से लाभ होगा।

लव लाइफ :विवाह या सगाई के संकेत।

टिप: अनुशासन में रहना फायदेमंद होगा।

मकर (Capricorn)

कार्ड:Ten of Wands

जिम्मेदारियों का बोझ महसूस हो सकता है। खुद पर जरूरत से ज़्यादा भार न डालें।

करियर:अधिक काम, कम राहत।

लव लाइफ: साथी से सहयोग मांगें।

टिप ज़रूरत हो तो ÷ना÷ कहने की हिम्मत रखें।

कुंभ (Aquarius)

कार्ड: Page of Swords

नई सोच और विचारों का सप्ताह। कोई नया आइडिया आपको सफलता की ओर ले जाएगा।

करियर: स्किल अपग्रेड या नया स्टार्टअप।

लव लाइफ: नए संवाद से रिश्तों में ताजगी।

टिप जिज्ञासु बने रहें, पर धैर्य न खोएं।

मीन (Pisces)

कार्ड: Three of Cups

जश्न, दोस्तों से मिलना और खुशखबरी मिलने का सप्ताह। कोई सेलिब्रेशन संभव है।

करियर: टीम वर्क से फायदा।

लव लाइफ: शादी, पार्टी या पुनर्मिलन का योग।

टिप: जीवन का आनंद लेना मत भूलिए।

संस्कारों का तमाशा

आज भी गांव में मांगी काकी का नाम संस्कारों की पहचान था। सीधी-सादी, अनपढ़ लेकिन दिल से समझदार। उनके जीवन का हर पल बड़ों का आदर, छोटों से स्नेह और भगवान का स्मरण करते बीतता। जब भी पांच लोग बैठते कहते–मांगी काकी की बातें पुरानी हैं, पर उनमें सच्चाई आज भी जिंदा है। रामलाल का बेटा रमेश गांव में ही पला बढ़ा पर गांव के पास ही शहर में बच्चों की पढ़ाई के लिए रहने लग गया। अब तो उसके बच्चे भी बड़े हो गए। आज रमेश की बेटी की शादी थी। मांगी काकी को भी बुलाया आया, रामलाल जी घर आकर कह कर गए थे। काकी मन ही मन खुश हुई–चलो सबसे मिलना हो जाएगा–÷शादी में कुछ पुराने रीति-रिवाज़

देखने को मिलेंगे। शादी वाले घर पहुँची तो देखा– बाहर बड़े-बड़े लाउडस्पीकर, डीजे की धुन पर झूमते लड़के, और कैमरे वालों की चकाचौंध।

काकी धीरे से बुदबुदाई–

अरे, ये कौनसी बारात है? न ढोल, न शहनाई÷ बस कान फोड़ने वाला शोर।अंदर पहुंची तो नज़ारा और भी अजीब था।दुल्हन मंडप में बैठी थी, पर बार-बार अपनी सहेलियों के साथ मोबाइल से सेल्फी खींच रही थी।दूल्हे के दोस्त शराब के नशे में धुत होकर नाच रहे थे।बुजुर्ग दादी-नानी एक कोने में अकेली बैठी थीं, किसी ने उनका हाल तक न पूछा।हर रस्म कैमरे के लिए की जा रही थी, भावनाओं के लिए नहीं।काकी के मन में टीस उठी। धीरे-से बोलीं–अरे, ये कौनसे संस्कार? जिन बड़ों के आशीर्वाद से घर-गृहस्थी बसती है, वो तो कोने में पड़े हैं। रस्में निभाने का मतलब फोटो खिंचवाना रह गया?पास खड़ी एक लड़की खिलखिलाकर हंस पड़ी–काकी, आप भी नाज अब कौन मानता है ये पुरानी बातें। आजकल तो बस फोटो और वीडियो चाहिए, बाकी सब फालतू है।काकी की आंखें भर आईं।धीरे से बोलीं–

बिटिया, संस्कार अगर सिर्फ दिखावे के लिए हों तो उनका कोई मतलब नहीं। असली संस्कार तो वो हैं,जो दिल से निभाए जाएं। बड़ों का सम्मान, रिश्तों की मर्यादाज यही तो समाज की नींव हैं। जब इन्हें लोग भूल जाएंगे, तो समझ लो घर केवल मकान रह जाएगा।

लड़की मुस्कराकर मोबाइल में उलझ गई।

लेकिन मांगी काकी का मन भारी हो गया।

आजकल जो सच्चे दिल से संस्कार निभाए, उसे लोग पागल समझ लेते हैं। संस्कार अब बस किताबों और कहानियों में रह गए हैंज हकीकत में तो ये तमाशा बन चुके हैं। पर रामलाल तो बड़ी-बड़ी बातें करता था। वह तो समाज का अध्यक्ष बना हुआ था। जब उसके पोते पोती ही संस्कारों का उल्लंघन करेंगे, तो उसे क्या अधिकार है समाज की बागडोर अपने हाथ में रखने की। काकी बिना खाना खाए बेमन वहां से बाहर आ गई। मन ही मन बुदबुदाने लगी,ऐसे लोगों के यहां क्या खाना खाना, जहां संस्कार सिर्फ तमाशा बन कर रह गए।

वीणा वैष्णव रागिनी
राजस्थान

ख़ामोशियां भी बहुत कुछ बोलती हैं

मनुष्य का जीवन केवल शब्दों और ध्वनियों पर आधारित नहीं है। असली भावनाएँ उन अनुभवों से निर्मित होती हैं, जिन्हें हम अपनी चुप्पी में छिपा लेते हैं। तभी तो कहा गया है

एहसासों को अल्फ़ाज़ देना आसान नहीं,
ख़ामोशियां दिलों में चुभती बहुत हैं।

शब्दों की अपनी सीमा है, पर ख़ामोशी असीम है। लफ़्ज़ों में कभी विश्वशता और दिखावा छिपा होता है, जबकि मौन निष्कलुष और सच्चा होता है।रिश्तों में ख़ामोशी रिश्ते जीवन का आधार हैं। यह भी सच है कि रिश्तों में उतर आई चुप्पी कई बार टूटन का कारण बन जाती है। लेकिन सच्चे रिश्तों की ख़ूबसूरती यही है कि वे बिना कहे भी सब समझ लेते हैं। माँ की नज़र बिना बोले आशीर्वाद देती है, प्रेमियों की चुप्पी हजार शब्दों से गहरी होती है।कभी-कभी सबसे गहरी बातें वही होती हैं,जो कभी कही ही नहीं जातीं।÷

समाज और ख़ामोशी

समाज के स्तर पर ख़ामोशी के अलग-अलग मायने हैं। जैसे-
सहमति का मौन-जब शब्द अनावश्यक हो जाते हैं।

विरोध का मौन- अन्याय के सामने चुप्पी भी प्रतिरोध बन सकती है। गांधीजी का 'मौन व्रत' इसका उदाहरण है।

लाचारी का मौन- समाज के उपेक्षित वर्गों की ख़ामोशी उनके दर्द की गवाही देती है।

मौन भी एक उत्तर है, और कई बार यह सबसे प्रभावी उत्तर होता है।÷

आत्ममंथन और ख़ामोशी

सबसे गहरी ख़ामोशी तब जन्म लेती है जब इंसान स्वयं से संवाद करता है। ध्यान और साधना इसी मौन पर आधारित हैं। जब बाहर का शोर थम जाता है, तभी भीतर की सच्चाई सुनाई देती है।

ख़ामोशी हमारी रूह की आवाज़ है,
जिसे सुनने के लिए भीतर उतरना पड़ता है।
मेरा एक शेर इसी संदर्भ में–
शोर जिसका बहुत दूर तक सुनाई दे,
अपनी ख़ामोशियों को वो जुबां बख़्शो।

संवाद केवल शब्दों तक सीमित नहीं है। कई बार शब्द कमजोर पड़ जाते हैं और मौन ज़्यादा असरदार हो जाता है।

शब्द झूठे हो सकते हैं, लेकिन ख़ामोशी हमेशा सच्ची होती है।
शब्द सीमित हैं, पर ख़ामोशी असीम है।
शब्द दिल दुखा सकते हैं, मगर ख़ामोशी दिल जोड़ भी देती है।

आधुनिक जीवन में ख़ामोशी की आवश्यकता

आज का मनुष्य सूचनाओं और संवादों के शोर में उलझा हुआ है। मोबाइल और सोशल मीडिया ने हमें चुप रहना लगभग भुला दिया है। जबकि मानसिक शांति और आत्मिक संतुलन के लिए मौन बेहद आवश्यक है। कुछ पल की ख़ामोशी विचारों को स्पष्ट करती है और हमें बेहतर निर्णय लेने की शक्ति देती है। शब्दों की दुनिया रंगीन है, लेकिन अधूरी। ख़ामोशी उसमें वह गहराई भरती है, जो शब्द नहीं कर पाते। रिश्तों का अपनापन, समाज का प्रतिरोध और आत्मा का मंथन,हर जगह मौन अपनी अनोखी शक्ति से मौजूद है। सच यही है कि- ख़ामोशियां बेज़ुबां नहीं।

(डॉ. फ़ौज़िया नसीम शाद-विनायक फीचर्स)

बही दूध की नदी

... कभी राजनीतिक पार्टियों का चुनावी नारा हुआ करता था कि हम जीते तो देश में दूध की नदियाँ बहेगी. समय के साथ मृगतृष्णि नारा देने वाले जरूर जीतते रहे पर दूध की नदियां तो नहीं बही बल्कि उलटे पानी की भी नदियां सूखने लगीं. और इस तरह तब से आज तक नेताओं के कालान्तरी झूठे ही रहे किन्तु अब बिना नारों के ही नदियों में बाढ़ आ रही है और तो और हाल ही में हिमाचल के कुछ्रू में दूध की नदी भी बह निकली. हुआ यूं कि वहां की दुग्ध सोसायटी का 2000 लीटर की क्षमता वाले मिल्क कूलिंग प्लांट में अचानक तकनीकी खराबी आने से वह सुबह-सुबह बंद हो गया. तब उसे सुधारने के लिए स्टोर किया गया सारा दूध नाले में बहाना पड़ा जो करीब 25 मिनट तक दूध की नदी जैसा दर्शित होता बहता रहा. हालांकि दूध का भारी नुकसान हुआ. किसानों को भी अगली सूचना तक दूध लाने के लिए मना किया गया. लेकिन कालांतर में नेताओं द्वारा दिया गया झूठा नारा देश में दूध की नदियां बहेगी का जनता का सपना हिमाचल प्रदेश के कुछ्रू में जरूर सच हो गया.....

महेश नेनावा, 57, गिरधर नगर (तिलक नगर के पास), इंदौर (म.प्र.)... फोन.. 0731-4046326.

IBM के ग्लोबल एंट्रेंस टेस्ट का रजिस्ट्रेशन शुरू

बेंगलुरु : IBM ने अपने ग्लोबल एंट्रेंस टेस्ट (GET) के लिए रजिस्ट्रेशन शुरू कर दिए हैं। यह एक राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा है, इसके ज़रिए छात्र भारत भर के चुनिंदा विश्वविद्यालयों में पोस्टग्रेजुएट प्रोग्राम में प्रवेश पा सकते हैं। रजिस्ट्रेशन की आखिरी दिनांक 7 सितंबर 2025 है। ऑनलाइन आवेदन https://222.ibmiceqwd.com/ पर जमा किए जा सकते हैं। यह परीक्षा उन अभ्यर्थियों के लिए है जो MCA, M.Sc और MBA जैसी पोस्टग्रेजुएट डिग्री प्राप्त करना चाहते हैं। ये प्रोग्राम IBM के Q²D पाठ्यक्रम के साथ जुड़ा होने के कारण खास हैं। इनको शैक्षणिक भागीदार के साथ मिलकर इस तरह से बनाया गया है जिससे उच्च शिक्षा को उद्योगों की बदलती जरूरतों के अनुसार बनाया जा सके। IBM Q²D सबसे बड़ी पहल है, इसका उद्देश्य प्रोफ़ेशनल की ऐसी नई पीढ़ी तैयार करना है जो एक स्मार्ट धरती बनाने में आगे बढ़कर अपनी भूमिका निभा सकें। इस पहल में अत्याधुनिक इन्फॉर्मेशन टेक्नोलजी (सूचना तकनीकी) और अलग-अलग उद्योगों से जुड़ी स्किल को सीधे विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। इस पहल को तकनीक के क्षेत्र में भविष्य की नेतृत्व भूमिकाओं के लिए छात्रों को तैयार करने के उद्देश्य से बनाया गया है। यह दुनिया भर के विश्वविद्यालयों और शैक्षणिक संगठनों के साथ मिलकर पहले से चले आ रहे पाठ्यक्रम और वास्तविक दुनिया में उद्योगों के अनुभव के बीच की खाई को पाटने का काम करती है। इस तरीके से प्रवेश पाने वाले छात्रों को कई शैक्षणिक और प्रोफेशनल क्रेडेंशियल (प्रमाणपत्र) प्राप्त होते हैं।

समय का रखें ध्यान

निश्चित ही सरकारी नौकरी की चाह किसे नहीं रहती क्योंकि इसमें जॉब सिक्योरिटी के साथ ही सुविधाओं का अंबार और पेंशन सुविधा भी रहती है रिटायरमेंट के बाद भी बड़ी ज़िंदगी अच्छे से कटती है मगर अक्सर देखने में आता है कि सरकारी कर्मचारियों पर लोग काम में लापरवाही की बातें करते हैं और कुछ कर्मचारियों का समय पर न आने से परेशान भी होते हैं और शायद यही वजह है कि कुछ विभागों में एप के माध्यम से उपस्थिति लगायी जाना अनिवार्य किया जा रहा है ?? ष्क्रैर!एप के माध्यम से उपस्थिति को उचित नहीं माना जा सकता क्योंकि नेटवर्क व अन्य समस्या सामने आ रही है और फिर इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है जो कभी भी धोखा दे सकता है।साथ ही जल्दबाजी में कर्मचारियों को दुर्घटना का सामना भी करना पड़ सकता है ,फिर ? ट्रेफिक जाम भी आम है ।इससे बचने के लिए जरूरी है कि कर्मचारी समय ? का ध्यान रखें और अपने कार्य के प्रति वफादार रहें समय पर काम पूर्ण करें ताकि एप के माध्यम से उपस्थिति ना लगानी पड़े।

साजिद अली चंदन नगर इंदौर।